भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-10, अंक-7-8	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
मंगलवार, 25 अग.' 87	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

गुणातीत विरासत के वारिसदार प.पू. पप्पाजी की जयंती के अवसर पर

1sept.....प.पू. पप्पाजी का प्राकट्य दिन अर्थात् गुणातीत समाज के लिए अत्यंत सौभाग्य का दिन ! हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसाद-स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. महंतस्वामि जैसे प्रभु रखे हुए पर भागवतं संत सामने से स्वयं गरजु बनकर हमारे जीवन में आये। जो स्वयं तो पारस हैं और अपने संबंध में आये लोहे जैसे पात्रों को–स्वभाव, प्रकृति, दोष देखे बिना पारस बना देते हैं.....

1916 की 1st Sept के महामंगलकारी दिन बोरसद गांव में मानवचेतना का परम कल्याण करने इस दिव्य विभूति का धरती पर प्रागट्य हुआ। अद्‌भुत, अनोखा कार्य करने ही प्रभु के स्वरूप केवल करुणा करके धरती पर प्रगट होते हैं। धरती पर अवतरित होने का उनका निजी कोई हेतु नहीं होता....ऐसे चैतन्य पुरुषों का आना-जाना हेतुलक्षी नहीं बल्कि चैतन्यलक्षी होता है। ऐसे गुणातीत पुरुषों की महिमा नेति-नेति होती है।

बचपन में मां बाप के एक आदर्श पुत्र के रूप में प.पू. पप्पाजी ने अपनी शिक्षा पूरी की....बचपन से ही खूब गम्भीर....कम बोलने का स्वभाव.... माता-पिता के खूब विश्वासपात्र..... प.पू. पप्पाजी के दादाजी 11 वर्ष की आयु में उनसे बहीखाते लिखवाते थे.... खूब विलक्षण बुद्धि....

1937 में प.पू. पप्पाजी अध्यापक के रूप में कार्य करने अफ्रीका गये। वहां अध्यापक के रूप में एक अनोखी छाप छोड़ी। 1952 में अपने छोटे भाई दादुभाई (प.पू. काकाजी को साक्षात्कार होने के बारे लोगों के उल्टा सीधा कहने पर प.पू. पप्पाजी भारत आये। यहां गुरुहरि योगीजी महाराज के दर्शन हुए। गुरुहरि योगीजी महाराज की पारखी दृष्टि ने प्रभु का कार्य करने ही धरती पर आये इस चैतन्य को पहचान लिया। गुरु शिष्य की अन्तर से अन्तर में ही बात हो गई। पूर्ण

पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान ही गुरुहरि योगीजी महाराज की दिव्य मानवदेह में प्रकट हैं वह दिल से मानकर प.पू. पप्पाजी ने अपने आपको प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया !

1 जून को गुरुहरि योगीजी महाराज को स्वय की आत्मा के रूप में इन्होंने स्वीकारा। प.पू. पप्पाजी ने हाथ जोड़कर पूछा 'बापा ! आपकी क्या आज्ञा है? प.पू. बापा ने तीन आज्ञा करी–

(1) यहां (भारत में) रहो

(2) दादुभाई (प.पू. काकाजी) के साथ रहकर काम करो और

(3) किसी का देखना नहीं

बस. प.पू. पप्पाजी उसी दिन से गुरुहरि योगीजी महाराज की योजना में प.पू. काकाजी के साथ लग पड़े। खूब प्रखर बुद्धि के मालिक होते हुए भी अपने गुरु के वचन को नीचे नहीं गिरने दिया। हरेक मुक्तों की हर क्रिया को निर्दोष ही नहीं माना, बल्कि व्यापक रूप में सभी में बापा को ही कर्ता हर्ता मानकर सहर्ष स्वीकार करा। आने वाली पीढ़ी के साधकों के लिए स्वयं एक असाधारण साधक के रूप में आदर्श जीवन जिये। 1952 से एक धारी जीवन ! विषय परिस्थितियों में भी वही उल्लास, वही आनन्द, वही सरलता, वही दासभाव, वही विनम्रता, वही सहजता-वात्सल्य-ममता व प्रेम की शांत मूर्ति... कहीं भी बनावट नहीं...केवल प्रभु की मूर्ति में खोये रहकर मूर्ति बांटने सेकण्ड-सेकण्ड की क्रिया करने में स्वाभाविकता। खूब शिस्तबद्ध नियमित जीवन... बापा द्वारा सौंपी गुणातीत वाड़ी की सेवा आज भी उसी दासत्वभाव, निर्दोषभाव से हमारे सामने कर रहे हैं। गृहस्थों, व्रतधारी युवकों, व्रतधारी बहनों का एक सुन्दर समाज उनके मार्गदर्शन से संचालित हो रहा है....

उनकी जयंती के परम पवित्र अवसर परअन्तर की यही प्रार्थना कि इस धरातल का तो वे मंगल हैं... तो, हमारे नयनों के समक्ष वे इसी देह में अत्यधिक रह कर हमें अपनी मूर्ति का सुख देते रहें... और सभी मुक्तों में हम इन्हीं के ही दर्शन करा करें...ऐसी वे करुणा बरसायें।

★★★

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

'भगवत्कृपा' के पिछले कई अंकों में आपने मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की अद्भूत साधुता के गुणों के बारे विस्तारपूर्वक पढ़ा.... सिंह तो अनेकों मिलेंगे पर केसरी सिंह कोई अलग होता है। वैसे ही साधु अनेक होते हैं पर गुणातीत साधु कोई ही एक.... अपनी कल्पना, सीमित बुद्धि और ज्ञान की सीमा से पार का वह 'साधु' होता है। सात समुद्र का पानी सूख सकता है, पर ऐसे साधु का प्रेम कभी सूखता नहीं। करोड़ों में नहीं, अरबों में कोई ऐसा अद्वितीय विरल साधु 'केवल कृपा' से मिलता है। संबंध में आने वाले हरेक का केवल हित ही सोचे वह है भगवान का अखंड धारक 'गुणातीत साधु।'

ऐसी सम्पूर्ण साधुता के गुणों से भरपूर अनादि के साधु मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को महाराज साथ में ही लाये और उनके द्वारा गुणातीत संत प्रणाली की ज्योति पृथ्वी पर अखंड जाग्रत और जीवंत रखी। जैसे सूरजमुखी फूल की निगाह केवल अपने प्राणदाता सूरज की तरफ ही होती है, वैसे ही स्वामी की निगाह केवल महाराज की ओर थी। गुणातीतानंदस्वामी ने असली साधु का अजोड़ जीवन जीकर हरेक के लिये प्रेरणारूप मशाल रख दी... अपने ऊपर पत्थर बरसाने वाले को भी शाप

नहीं, आशीर्वाद ही बरसाये। उनके जीवन का एक प्रसंग इस बात पर सहज दर्शन कराता है–

एक बार स्वामी संतों के साथ विचरण करते-करते सौराष्ट्र के सांवरकुंडला गांव जा पहुंचे। उस समय स्वामिनारायण के साधुओं की साधुता भक्तिभाव, प्रेम, पवित्रता निर्मानीपन आदि विशिष्ट गुणों के कारण ढोंगी साधुओं की आजीविका के लाले पड़ने लगे थे। वह द्वेष के कारण जगह-जगह विरोध फैला रहे थे। स्वामिनारायण के संतों को मुंडिया कह कर सम्बोधित किया जाता था। द्वेषी लोग अब राजाओं, दरबारों व प्रजा को स्वामिनारायण के विरुद्ध भड़काने लगे थे।

सांवरकुंडला का दरबार उगा खुमाण ढोंगी साधुओं के भड़काने से स्वामिनारायण सम्प्रदाय का कट्टर विरोधी हुआ था। जैसे ही उसे पता चला कि स्वामिनारायण के साधु उसके गांव में आये हैं, तो उसने मन ही मन संतों को खूब कष्ट देकर गांव से बाहर निकालने का निर्णय करा, ताकि वे दुबारा उस गांव में न आयें। उसने संतों को खूब गालियां दी और तपती गर्मी में संतों को बाजरे का खेत कटवाने ले गया।

एक ओर उस समय सूर्य की पूरी भट्ठी तप चुकी थी। धरती आग से उबल रही थी। दूसरी ओर संतों को निर्जला एकादशी का व्रत था। परन्तु सहन करना संतों का स्वधर्म था। कैसे भी संजोगों में दुःखी न होना–महाराज की सीख थी। संतों ने सारा दिन अथक परिश्रम किया। कीड़ी जैसे जीव को भी कभी न दुःख देने वाले संतों तो शाम को 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करते-करते वापस नजदीक नदी किनारे आ गये। ऐसी स्थिति में किसी के मुंह से मार खाने के कारण सिसकारी निकल रही थी तो कोई साधु भजन कर रहा था। उनका यह दुःख देखकर नदी किनारे आये हुए चरवाहे व पानी भरने आई औरतें आपस में बात करने लगी कि 'यह दरबार कैसा निर्दयी है? संतों को कैसा कष्ट दिया? ऐसे दुष्ट के यहां लड़का कहां से होगा? साधुओं के कानों में यह शब्द पड़े। उन्होंने स्वामी को बात करी। स्वामी की तो खूब दयालु प्रकृति थी। उन्हें तो सबका हित करने की और अपने संबंध में आने वाले हरेक को–चाहे वह व्यक्ति असुर प्रकृति का ही क्यों न हो उसे अपना बनाने की मंगल भावना थी। स्वामी सहज बोल उठे–'चलो ! सब धून्य करके संकल्प करो कि महाराज दरबार के यहां मुक्त (लड़का) दे, दरबार का घर सत्संगी बने और वह लड़का हमें बाइज्जत अपने घर लेकर जाये।'' सब साधु भूखे हैं, मार खाई हैं, अपमानित हुए है–वह सब भूल कर भजन करने लग गये। बाद में एक साधु ने पूछा कि स्वामी, आप लड़का तो दोगे, पर दरबार को कैसे पता चलेगा कि वह लड़का आपका दिया हुआ है? अनंत ब्रह्मांड में अपने प्रभु का ही धारा होता है उस दृढ़ता के साथ संकल्प करके स्वामी बोले 'उस लड़के की जीभ पर शिवलिंग होगा, जिससे सबको मालूम होगा कि यह महाराज का दिया हुआ लड़का है।' कैसी स्वामी की विशाल दृष्टि.... कैसा वात्सल्य भरा मोम से अधिक नरम दिल... अत्याचारी द्वेषी, दुष्ट जनों पर भी दयापूर्ण दृष्टि ही नहीं, बल्कि कल्याणकारी व उसे सर्वदा सुखी करने की ही कामना....

लगभग 10-12 वर्ष बीत जाने के बाद स्वामी फिर उसी गांव के रास्ते से निकले तो दरबार का लड़का साधुओं का संघ देकर करीब दौड़ा आया व स्वामी की उंगली पकड़कर अपने घर ले जाने की जिद करने लगा। स्वामी तो अन्तर्यामी रूप से सब जानते थे। उस लड़के के साथ दरबार के घर

में गये। दरबार अब वृद्ध भी हो चुका था। स्वामी ने तो सारा पिछला प्रसंग याद कराते हुए कहा– 'दरबार ! कुंवर का जन्म नहीं हुआ था उससे पहले की बात है। एक दिन आपके हुक्म से आपके नौकरों ने हमारे संतों को मार-मार कर गांव से बाहर निकाल दिया था। वह याद है? वह साधु हम ही हैं। हमने उस समय मार खाकर, भूखा रह कर भी तुम्हारा हित चाहा था कि भगवान तुम्हें लड़का दे और ऐसा समय आये कि दरबार की देहरी पर हमारे संतों की झोलियां टंगी दिखाई दें। आज वह समय आया है। तुम्हारा ही लड़का हमें हाथ पकड़कर यहां लाया है।' दरबार को इस बात पर विश्वास न आने पर स्वामी ने प्रमाणरूप में लड़के की जीभ पर शिवलिंग दिखाया।

अब दरबार की आंखें खुली। करुणानिधि साधु की करुणा का दर्शन करके दरबार की आंखें भीग गई। दरबार स्वामी के पांव में पड़कर अपने अपराध की क्षमा मांगने लगा। स्वामी ने कहा– 'हम अपराध देखते ही नहीं। केवल आशीर्वाद देते हैं और सबके कल्याण की ही इच्छा रखते हैं।'

सहन करने वाले खूब मिलेंगे। सहन करके ऊपर से बक्षीश देने वाले भी मिलेंगे। पर आत्मा की भूख की तृप्ति कराने वाले साधु कहां मिलेंगे? दरबार ने स्वामी को जहर का प्याला दिया और स्वामी ने बदले में अमृत का कुंभ ! करोड़ों मां के प्रेम को भी फीका कर दे ऐसे साधु की कल्पना करना ही कठिन है।

ब्रह्मप्रवाह.....

सभी की प्रगट की निष्ठा की खूब-खूब रक्षा महाराज और स्वामी करें और किसी का भी अभाव हमें न आवे ऐसा मन और हृदय सद्गुरुजी कर दें ऐसी तीव्र भावना रखा करनी..... अब शिष्टाचार की भक्ति छोड़कर अंतर की खोज व सूझ को हम पकड़ें और प.पू. बापा को जो खूब जंचता था (पसंद था) वही करने लग पड़े व उनको जो न जंचता हो वह हम कर ही न पायें ऐसे असमर्थ वे हमें बना दें यूं दृढ़ संकल्प करना।

जनेवा, 1984

प.पू. काकाजी महाराज

☆ ☆ ☆

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 1.9.87	मंगलवार	प.पू. प्र.ब्र.स्व. पप्पाजी की जन्म जयंती
2.	दि. 4.9.87	शुक्रवार	एकादशी, निर्जला व्रत
3.	दि. 11.9.87	शुक्रवार	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध
4.	दि. 17.9.87	गुरुवार	श्रीजी महाराज व ब्र.स्व. जागास्वामी का श्राद्ध
5.	दि. 18.9.87	शुक्रवार	एकादशी, ब्र. स्व. योगीजी महाराज का श्राद्ध
6.	दि. 19.9.87	शनिवार	ब्र.स्व. काकाजी महाराज का श्राद्ध
7.	दि. 20.9.87	रविवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी व ब्र.स्व. भगतजी महाराज का श्राद्ध

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P.,Printers, Shahdara, Delhi-110 032